International Journal of Information Movement Vol.I Issue X (February 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 47-51

निराला काव्य में भाव सौंदर्य

अलका रानी
पीएच० डी० (हिन्दी) शोधार्थी
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

सार

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिन्दी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता है चित्रण–कौशल। आंतरिक भाव हो या बाह्य जगत के दृश्य–रूप, संगीतात्मक ध्वनियां हो या रंग और गंध, सजीव चरित्र हों या प्राकृतिक दृश्य, सभी अलग–अलग लगनेवाले तत्त्वों को घुला–मिलाकर निराला ऐसा जीवंत चित्र उपस्थित करते हैं कि पढ़ने वाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है। निराला के चित्रों में उनका भावबोध ही नहीं, उनका चिंतन भी समाहित रहता है। इन प्रयोगों की विशेषता यह है कि वे विषय या भाव को अधिक प्रभावशाली रूप में व्यक्त करने में सहायक होते हैं। निराला जी की भाषा भावानुकूल है जहाँ कवि के भावों में गहनता, प्रौढ़ता है वहाँ भाषा भी गहन, गम्भीर और प्रौढ़ है। जहाँ भावों में कोमलता, सुकुमारता है वहाँ भाषा भी सिनग्ध, सरस, कोमल और मधुर है। जहाँ भावों में आक्रोश, आवेग एवं उद्वेग हैं वहाँ भाषा भी व्यंग्यात्मक, मुहावरेदार है। जैसे 'कुकुरमुत्ता', 'नये पत्ते' में भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की है। परवर्ती रचनाओं में अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

मानव मन भावों से भरा है । इन भावों में द्वंद्व नहीं होता अपितु एक समय में मानव मन में एक ही भाव जागृत होता है । मन में उत्पन्न होने वाले विचार का अपरिपक्व आरंभिक और मूल रूप जिसमें उसका आशय या उद्देश्य भी निहित होकर विचार में परिणत होता है । जैसे – उस समय मेरे मन में अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न हो रहे थे । मन में उत्पन्न होने वाले भावों में ममता, प्रेम, वात्सल्य, ईर्ष्या, द्वेष, समता तथा वसुधैवकुटुंबकम् आदि प्रमुख भाव हैं –

1.0 ममता

रामचन्द्र वर्मा ने ममता की व्युत्पत्ति एवं अर्थ देते हुए लिखा है– "ममता – स्त्री० (सं० मम + तल् + टाप्)

1. यह भाव या विचार कि आमुक (पदार्थ या व्यक्ति) मेरा है, 'मम' का भाव ममत्व ।
2. परम आत्मीयता के कारण मन में होने वाला प्रेम या स्नेह । जैसे–पिता या माता की संतान के प्रति होने वाली ममता ।
3. मन में होने वाला किसी का मोह या लोभ ।
4. अभिमान । गर्व ।"

मम (मेरा) का भाव अर्थात् ममत्व ही ममता है चाहे वह किसी वस्तु, जीव या व्यक्ति में हो । ममत्व में संबंधित को सुखी एवं उन्नति करते देख कर आनंद की अनुभूति होती है । रंचमात्र भी विद्रोह से अनिष्ट की आशंका दुःखदायी होती है । आंख से ओझल होना भी सहृय नहीं होता है । प्रेम, मोह, लोभ, ममता से भिन्नार्थक शब्द है । निराला में पुत्री सरोज के प्रति अपार ममता थी । सरोज को धन्ये शब्द से संबोधित करते हुए उन्होंने लिखा है –

"धन्ये मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित कर न सका ।

जाना तो अर्थागमोपाय
पर एहा सदा संकुचित काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ–समर ।
शुचिते, पहनाकर चीनांशुक
रख सका न तुझे अतः दधिमुख ।
क्षीण का न छीना कभी अन्न,
मैं रख न सका वे दृग विपन्न,
अपने आंसुओं अतः बिंवित
देखे हैं अपने ही मुख–चित ।
सोचा हैं न हो बार–बार–"[1]

सरोज के प्रति निराला में अपार ममता थी । अट्ठारह वर्षीय सरोज की असामयिक मृत्यु ने निराला को तोड़ दिया ।

2.0 प्रेम

निराला का संपूर्ण काव्य प्रेममय है । सरोज स्मृति स्नेहोपहार देते हुए उन्होंने लिखा है –

"यह हिन्दी का स्नेहोपहार
है नहीं हार मेरी, भास्वर
यह रत्नहार–लोकोत्तर वर ।
अन्यथा, जहां है भाव शुद्ध
साहित्य कला कौशल प्रबुद्ध,
हैं दिये हुए मेरे प्रमाण
कुछ नहीं, प्राप्ति को समाधान
पार्श्व में अन्य रख कुशल हस्त
गद्य में पद्य में समाभ्यस्त ।"

जूही की कली प्रेमिका, पवन जिसे मलयानिल कहते हैं प्रेमी का प्रतीक है । कांता की याद आते ही सरितकानन पार करता हुआ वहां पहुंचा जहां उसने केलि की थी और कली खिली थी ।

3.0 वात्सल्य

संतान या शिष्य के प्रति माता–पिता या गुरु–गुरुमाता के प्रेम को वात्सल्य कहा जाता है । निराला को आत्मजा सरोज से अपार स्नेह, लाड़ प्यार या वात्सल्य था । धनाभाव एवं पत्नीविहीनता में उसकी सेवा–सुश्रुषा नहीं कर सके । सरोज को ननिहाल भेज दिया । इसका उन्हें महान् खेद है । सरोज अभी मात्र सवा साल की थी निराला का वात्सल्य रेखांकित है –

"तू सवा साल की जब कोमल
पहचान रही ज्ञान में चपल
मां का मुख, हो चुम्बित क्षण–क्षण
भरती जीवन में नव जीवन,
वह चरित पूर्ण कर गई चली
तू नानी की गोद जा पली

सब किये वहीं कौतुक विनोद
उस घर निशि–वासर भरे मोद ।"

निराला का सरोज के प्रति अपार वात्सल्य था के तथाकथित ब्राह्मण कान्यकुब्जों के यहां उसका विवाह करने को तैयार नहीं हुए ।

4.0 ईर्ष्या

किसी व्यक्ति की उन्नति न देख सकने से उसके प्रति जलन का भाव पैदा होता है । यदि व्यक्ति अपेक्षित आदर–सम्मान नहीं देता है तब उसके प्रति ईर्ष्याभाव उत्पन्न होता है । निराला को संपादकों एवं आलोचकों से ईर्ष्या होती थी जब वे रचना को प्रकाशित न कर संक्षिप्त उत्तर देकर प्रत्यावर्तित कर देते थे। ईर्ष्या भाव रेखांकित है –

"तब भी मैं इसी तरह समस्त
कवि–जीवन में व्यर्थ भी व्यस्त
लिखता अबाध गति मुक्त छन्द
पर सम्पादक गण निरानंद
वापस कर देते पढ़ सत्वर
दे एक–पंक्ति दो में उत्तर ।"

5.0 द्वेष

अपने को पराया या दूसरा समझने का भाव द्वेष कहलाता है। रामचन्द्र वर्मा ने द्वेष की व्युत्पत्ति एवं अर्थ देते हुए लिखा है – "किसी के प्रति होने वाले विरोध, वैमनस्य, शत्रुता आदि के फलस्वरूप मन में रहने वाला ऐसा भाव, जिसके कारण मनुष्य उसका बनता या होता हुआ काम बिगाड़ देता है अथवा उसे हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है ।"

संपन्न लोगों से द्वेष प्रदर्शित करते हुए निराला ने लिखा है –

"किनारा वह हमसे किये जा रहे हैं ।
दिखाने को दर्शन दिये जा रहे हैं ।
जुड़े थे सुहागिन के मोती के दाने
वही सूत तोड़े लिये जा रहे हैं ।
छिपी चोट की बात पूछी तो बोले
निराशा के डोरे सिये जा रहे हैं ।
जमाने की रफ्तार में कैसा तूफां,
मरे जा रहे हैं, जिये जा रहे हैं ।
खुला भेद, विजयी कहाये हुए जो,
लहू दूसरे का पिये जा रहे हैं ।"

6.0 समता

समता का अर्थ बराबरी है । यह बराबरी ऊंच–नीच, अमीर–गरीब, शिक्षित–प्रशिक्षित, दलित–सर्वहारा, सुख–दुःख, जय–विजय, लाभ–हानि आदि में विषमता नहीं समता का भाव देखते हैं । निराला ने कड़ाई और कोमलता, बलि और बलिआंतें, गेह और स्नेह सब में समता देखी है –

"मुसीबत में कटे हैं दिन
मुसीबत में कटीं रातें ।
लगी हैं चांद सूरज से
निरंतर राहु की घातें ।
जो हस्ती से हुए हैं, पस्त,

समझे हैं वही क्या है,
गुजरती ज़िंदगी के साथ
हरकत से भरी बातें ।
कड़ाई से दबी है कोमलता,
यह माजरा, सच है –
झपटने के लिए बलि पर
सिकुड़ती हैं बली आंतें ।
सुखों की सोई दुनियां में
जगी जो वह भी गफ़लत है,
कहां हैं गेह की बातें,
कहां है स्नेह की बातें ।"

निराला ने पिता और माता में पूर्ण समानता समझी है इसलिए सरोज के विवाहोपरांत माता ही नहीं मातृश्वसा का कर्त्तव्य भी निभाया है । मां की कुछ शिक्षाएं भी दी तथा पुष्प–शैय्या भी सजायी । सरोज को शकुंतला मानकर सभी प्रकार के पाठ पढ़ाए तथा समस्त कलाओं से परिपूर्ण किया –

"मां की कुल शिक्षा मैंने दी,
पुष्प–सेज तेरी स्वयं रची
सोचा मन में, "वह शकुंतला,
पर पाठ अन्य यह अन्य कला ।"

7.0 वसुधैव कुटुम्बकम

संस्कृत में प्रसिद्ध श्लोक है –

"अयं निजः परावेत्ति गणना लघुचेत्तसां
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकं ।।"

अर्थात् क्षुद्र बुद्धि वाले यह मानते हैं कि यह हमारा है, यह तुम्हारा है, किन्तु उदार चरित्र के व्यक्ति संपूर्ण संसार को परिवार के समान समझते हैं । वसुधा का अर्थ समस्त मानवता को धारण करने वाली पृथ्वी ही नहीं अपतु जीव–जंतु, पशु–पक्षी, प्रकृति के समस्त रूपों से आच्छादिंत एवं मानव से निवसित यह धरा पृथ्वी कहलाती है। निराला संपूर्ण सृष्टि को एक परिवार, समझते हैं । जिसका पग–पग जगमग एवं मनोहर है । वर्ण एवं गंध से ओत–प्रोत है । तरु उर अरुणिमा से भरपूर है । कली–कली खिली हुई है । कोयल पावन पंचम स्वर में गा रही है । पक्षी समूह मृदुल–मनोरम कलरव कर रहे हैं । वनश्री की चारुता दिव्य अलौकिकता बिखेर रही हैं –

"रंग गयी पग–पग धन्य धरा,
हुई जग जगमग मनोहरा ।
वर्ण गंध धर, मधु–मरन्द भर,
तरु–उर की अरुणिमा तरुणतर
खुली रूप–कलियों में पर भर
स्तर–स्तर सुपरिसरा ।
गूंज उठा पिक–पावन–पंचम
खग–कुल–कलख मृदुल मनोरम,
सुख के भय कांपती प्रणय–क्लम
वन–श्री चारुतरा ।।"

मानव मन के विभिन्न भावों में निराला काव्य में अपनत्व की भावना अर्थात् ममता, स्नेह, अनुराग से पूरित प्रेम, संतति प्रेम अर्थात् वात्सल्य किसी के उत्कर्ष अथवा उन्नति से जलना अर्थात् ईर्ष्या स्व को पर अर्थात् द्वेष भाव सब प्राणी जीव–जगत, जड़–चेतन, पशु–पक्षी को समान समझना

अर्थात् ममता भाव तथा संपूर्ण विश्व को अपना पराया न मानते हुए सब में पारिवारिक भावना रखना अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम आदि का भाव सौंदर्य संपूर्ण निराला काव्य में व्याप्त है ।

संक्षेप में कह सकते हैं कि मानव मन के विभिन्न भावों में निराला काव्य में अपनत्व की भावना अर्थात् ममता, स्नेह, अनुराग से पूरित प्रेम, संतति प्रेम अर्थात् वात्सल्य किसी के उत्कर्ष अथवा उन्नति से जलना अर्थात् ईर्ष्या स्व को पर अर्थात् द्वेष भाव सब प्राणी जीव–जगत, जड़–चेतन, पशु–पक्षी को समान समझना अर्थात् ममता भाव तथा संपूर्ण विश्व को अपना पराया न मानते हुए सब में पारिवारिक भावना रखना अर्थात् वसुधैव कुटुम्बकम आदि का भाव सौंदर्य संपूर्ण निराला काव्य में व्याप्त है ।

8.0 संदर्भ

1. पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, राग–विराग, पृ० 80–81
2. प्रसाद, सहाय, श्रीवास्तव, बृहत हिन्दी कोश, पृ० 1177
3. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 2/38, पृ० 40
4. रामचंद्र वर्मा, मानक हिंदी कोश (तीसरा खंड), पृ० 665–66
5. रामचंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश (पांचवां खंड), पृ० 48–49
6. रामचंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश (चौथा खंड), पृ० 215–216
7. रामचंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, (पहला खण्ड), पृ० 314
8. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोश, पृ० 916